भगत कबीर – सबद ४

सुख मांगत दुख आगै आवै ॥

राग गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३३०

सुख मांगत दुख आगै आवै ॥
सो सुख हमहु न मांगिआ भावै ॥१॥
बिखिआ अजहु सुरत सुख आसा ॥
कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥
इस सुख ते सिव ब्रह्म डराना ॥
सो सुख हमहु साच कर जाना ॥२॥
सनकादिक नारद मुन सेखा ॥
तिन भी तन महि मन नही पेखा ॥३॥
इस मन कउ कोई खोजहु भाई ॥
तन छूटे मन कहा समाई ॥४॥
गुर परसादी जैदेउ नामां ॥
भगत कै प्रेम इन ही है जानां ॥५॥
इस मन कउ नही आवन जाना ॥
जिस का भरम गइआ तिन साच पछाना ॥६॥
इस मन कउ रूप न रेखिआ काई ॥
हुकमे होइआ हुकम बूझ समाई ॥७॥
इस मन का कोई जानै भेउ ॥
इह मन लीण भए सुखदेउ ॥८॥
जीउ एक अर सगल सरीरा ॥
इस मन कउ रव रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥

सार: खुशी को अक्सर सांसारिक इच्छाओं पूरा करने से मिलने वाले सुख के रूप में देखा जाता है, जो अस्थायी संतोष प्रदान करती है। जैसे ही एक इच्छा पूरी होती है, नई इच्छाएं उत्पन्न हो जाती हैं जिससे असंतोष का एक चक्र बनता है। दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं से प्राप्त अंतर्दृष्टि सच्ची खुशी पाने के लिए बुद्धिमत्ता प्रदान कर सकती है।

सुख मांगत दुख आगै आवै ॥
सुख मांगने पर दुःख आगे आता है अर्थात दुनियावी सुखों की तलाश में ख़ुशी ढूंढना अक्सर दुःख का कारण बनता है।

सो सुख हमहु न मांगिआ भावै ॥१॥
तो सुख हम को नहीं मांगना अर्थात इन क्षणिक सुखों की तलाश करना व्यर्थ है क्योंकि यह शांति नहीं देते हैं। (१)

बिखिआ अजहु सुरत सुख आसा ॥
लोग बुरी इच्छाएँ मन में रखते हैं लेकिन फिर भी वह मन से शांति चाहते हैं।

कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥
ऐसे मन में कैसे सर्वव्यापी जागरूकता की एकता निवास कर सकती है। (१)(विराम)

इस सुख ते सिव ब्रह्म डराना ॥
मोह-माया के आकर्षण का सुख तो बड़े-बड़े ज्ञानी संतों को भी डराता है।

सो सुख हमहु साच कर जाना ॥२॥
लुभावने सांसारिक सुखों को ही अक्सर असली सच मान लिया जाता है। (२)

सनकादिक नारद मुन सेखा ॥

प्राचीन ऋषि-मुनि जैसे सनकादिक, नारद मुनि और सेखा भी।

तिन भी तन महि मन नही पेखा ॥३॥

मन के रहस्यों को पूरी तरह नहीं जान पाए अर्थात ऐसे विद्वानों ने भी शरीर के भीतर बसे मन की असली स्थिति नहीं जानी है। (३)

इस मन कउ कोई खोजहु भाई ॥

अरे साथियों, इस मन को समझने और इसकी गहराई को जानने की कोशिश करो।

तन छूटे मन कहा समाई ॥४॥

जब शरीर नष्ट हो जाता है तब मन कहाँ समाता है? (४)

गुर परसादी जैदेउ नामां ॥

मालिक की कृपा से जयदेव और नामदेव, जैसे संतों ने

भगत कै प्रेम इन ही है जानां ॥५॥

प्रेम और भक्ति से ही मन के सच को पहचाना है। (५)

इस मन कउ नही आवन जाना ॥

मन के विचार का न कोई आरंभ है, न अंत।

जिस का भरम गइआ तिन साच पछाना ॥६॥

जब मन के भ्रम मिट जाते हैं तब विश्वव्यापी सत्य की पहचान होती है। (६)

इस मन कउ रूप न रेखिआ काई ॥

मन का कोई रूप, रेखा या सीमा नहीं होती।

हुकमे होइआ हुकम बूझ समाई ॥७॥

प्रकृति के आदेश से ही मन में विचार उत्पन्न होते हैं। इसी इच्छा के अनुसार ज्ञान को समझा और सम्मिलित किया जाता है। (७)

इस मन का कोई जानै भेउ ॥

क्या कोई इस मन की गहराई और रहस्य को समझ सकता है?

इह मन लीण भए सुखदेउ ॥८॥

जब मन स्थिर और शांत होता है तब असली सुख प्राप्त होता है। (८)

जीउ एक अर सगल सरीरा ॥

सभी जीवों प्राणियों में एक ही चेतना की ऊर्जा का वास है।

इस मन कउ रव रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥

कबीर कहते हैं कि इस मन पर मैं लगातार ध्यान करता हूँ। (९)(१)(३६)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि सभी प्राणियों में एक ही चेतना की ऊर्जा निवास करती है, इस गहन सत्य पर ध्यान देना ज़रूरी है। इस विचार पर लगातार चिंतन करके वह आंतरिक शांति प्राप्त करते हैं। इस अभ्यास के द्वारा भगत कबीर सभी जीवों के अंतर्संबंध की सराहना कर अपने भीतर सद्भावना पैदा करते हैं। यह विचार एक संतुष्ट जीवन की ओर मार्गदर्शन करता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com